Bill No. 3/07-08

36

2008-0188

क्षयाधिमास तत्वम_ with comm.
तत्वप्रकाशिका in Hindi by पं०
लषण लाल झा.
वैद्यनाथधाम (देवघर), n.d.

(5)

1379



क्ष

या

धि

क्ष या धि मा स त त्व म्

स

त

त्व

म्

लेखक :

आचार्य पं० श्रीलषण लाल झा

प्रधानाध्यापक—

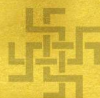
वैद्यनाथ कमल कुमारी संस्कृत विद्यालय

देवघर (वैद्यनाथधाम)

प्रकाशकः— पं० श्री ब्रजेन्द्र मिश्र
ज्योतिषसाहित्याचार्य सा० रत्न
अध्यापक—
वैद्यनाथ क० कु० सं० वि० देवघर
वैद्यनाथधाम ।

प्रथम संस्करण — १०००

मुद्रकः— रामप्रसाद पाण्डेय
साहित्य प्रेस (हिन्दी विद्यापीठ)
देवघर ८१४११५



भूमिका

—०—

लोके द्वावपि विख्यातौ क्षयमासाधि-मासकौ ।
ज्योतिषे धर्मशास्त्रेच निर्णीतौ तावुभौ स्फुटौ ॥१॥
ज्योतिर्विदग्रगण्यश्री भास्करेण तथा पुरा ।
उक्तं शिरोमणौ सम्यग् ततो भट्टेन संस्फुटम् ॥२॥
दर्शितं वासना भाष्ये गणकानन्द दायकम् ।
मुनीश्वरेण सम्प्रोक्तं सिद्धान्ते युक्ति संयुतम् ॥३॥
अन्येऽपि वहवः प्रोक्ताः मुहूर्त्तं करणे तथा ।
क्षयाधिमाससिद्धान्ताः विमलाऽतिपरिस्फुटा ॥४॥
परञ्चोक्तेषु ग्रन्थेषु नैकत्र तौ परिस्कृतौ ।
स्थितौ, तेनाल्पधीस्तत्र संशयाब्धौ निमज्जति ॥५॥
अतो मन्दधियां तुष्टयै ग्रन्थोऽयं रचितोमया ।
तत्त्व प्रकाशिका हिन्दी-टीकया समलंकृतः ॥६॥
भेदोऽपि विहितस्तत्र मध्यमस्पष्टमानयोः ।
स्पष्ट मानेनं तौ सिद्धौ क्षयमासाधिमासकौ ॥७॥
क्षयमासीय वर्षे तु तस्मान्मासत्रयान्तरे ।
पूर्वापर क्रमेणैव द्वौ मासावधिमासकौ ॥८॥
भवतस्तद्विशेषाः ये ग्रन्थेऽस्मिन् प्रतिपादिताः ।
सफलं क्षयमासस्य वैशिष्टयमपि. दर्शितम् ॥९॥
सीसकाक्षर दोषेण मदज्ञानजाऽथवा ।
या त्रुटिरत्र संजाता सा क्षन्तव्याबुधैरिति ॥१०॥

इति—विनितो
लषणलालः

विषय सूची.



॥ ॐ नमस्तस्मै ॥

क्षयाधिमास तत्त्वम्

। तत्त्वप्रकाशिका हिन्दी भाष्योपेतम् ।

मङ्गलाचरणम्

गजाननं नमस्कृत्य ध्यात्वा गुरुपदाम्बुजम् ।
क्षयाधिमासतत्त्वाख्यः प्रबन्धोऽयं विरच्यते ॥१॥
यद्यप्यस्य सुसिद्धान्ताः प्राचीनैः प्रतिपादिताः ।
तथाप्यल्पधियां तुष्ट्यै प्रयत्नोऽयं मयाकृतः ॥२॥

श्री गणेश को प्रणाम कर और गुरुचरणकमल का ध्यान कर क्षयाधिमासतत्त्व' नामक प्रबन्ध लिखता हूँ। यद्यपि इस विषय के उत्तमसिद्धान्त प्राचीनाचार्य द्वारा ज्योतिष शास्त्र में कथित है, तथापि मन्द बुद्धि के प्रसन्नार्थ मैंने यह प्रयत्न किया है ॥१-२॥

मानकथन---

ब्राह्म्यं दिव्यं तथा पैत्र्यं प्राजापत्यं च गौरवम् ।
सौरञ्च सावनं चान्द्रमार्क्षं मानानि वै नव ॥३॥

ब्रह्म. देव, पितर, प्रजापति, गुरु, सूर्य, सावन; चान्द्र और नक्षत्र सम्बन्धी काल के नवबिध मान हैं ॥३॥

विशेष—चतुर्युगमान का नाम एक महायुग है और एक हजार महायुग बीतने पर ब्रह्मा का एक दिन होता है, यह ब्रह्म सम्बन्धी मान है। एक सौरवर्ष देवों का १ दिन होता है, अतः यह देव सम्बन्धीमान है। त्रिंशत् तिथ्यात्मक एक चान्द्रमास पितरों का एक अहोरात्र होता है, अतः यह पितृ-सम्बन्धी मान है। ७१ महायुग का १ मनु होता है, यह मनु-सम्बन्धी मान है। मध्यमागति से गुरु एक वर्ष में एक राशि

का भोग करता है अतः उसे गुरु सम्बन्धी (गौरव) मान कहते हैं। सूर्य राशि सञ्चार का नाम सूर्य-सम्बन्धीमान है। सूर्योदय से सूर्योदय पर्यन्त काल का नाम सावनदिन है। यह भू-सम्बन्धीमान है। त्रिशत् तिथ्यात्मक मास चन्द्र सम्बन्धी मान है। षष्टि घट्यात्मक अहोरात्र नक्षत्र सन्बन्धी मान है, इस रीति से काल का नवबिधमान जानना चाहिए।

व्यवहारोपयोगि मान कथन—

चतुर्भिर्व्यबहारोऽत्र सौरचान्द्रार्क्ष सावनैः ।
बार्हस्पत्येन षष्ट्यब्द ज्ञेयं नान्यैस्तु नित्यशः ॥४॥

पृथ्वी पर सौर, चान्द्र, नाक्षत्र और सावन मानों का विशेष व्यवहार होता है। बार्हस्पत्य (गुरु) मान से बिजयादि ६० सम्बत्सर होते हैं। अन्य मानों का व्यवहार दैनिक कार्योपयुक्त नहीं है ॥४॥

चतुर्विधमानलक्षण—

नाड़ीषष्टयातु नाक्षत्र-महोरात्रं प्रकीर्तितम् ।
तत् त्रिंशताभवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा ॥५॥
ऐन्दवस्तिथिभिस्तद्वत् संक्रान्त्या सौर उच्यते ।
मासैर्द्वादशभिर्वर्षं दिव्यं तदह उच्यते ॥६॥

साठ दण्ड (घड़ी) का एक नाक्षत्रीय दिन और तीस नाक्षत्रीय दिन का एक नाक्षत्रीय मास होता है। एक सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय पर्यन्त काल का एक सावनदिन और तीस सावनदिन का एक सावन मास होता है ॥४॥ एक तिथि का मान एक चान्द्रदिन और त्रिशत् तिथ्यात्मक चान्द्रदिन का एक चन्द्रमास होता है। यह चन्द्रमास कृष्णादि और शुक्लादि के भेद से

द्विविध होता है एक राशि में सूर्य जितने दिन रहते हैं, वह सौर मास है अतः सूर्य संक्रान्तिवश सौरमास का ज्ञान होना कहा गया है। बारह सौर मासों का एक सौरवर्ष होता है। वह देवताओं का १ दिन होने से उसे दिव्यदिन बताया गया है ॥६॥

विशेष— प्रबह वायुबश ६० घटी में पृथ्वी की परिक्रमा नक्षत्र द्वारा होती है अतः साठ घटी का एक नाक्षत्रीय दिन कहा गया है। सूर्य से चन्द्र का अन्तर जब बारह अंश होता है तब एक तिथि होती है। वह एक चान्द्रदिन है। चान्द्रदिन से सावन दिन बड़ा होता है, क्योंकि वह ६० घटी से अधिक है। सावन दिन से सौर दिन बड़ा है। इसका कारण यह है कि १ सावन दिन में सूर्य की गति ५९ कला और ८ विकला होती है तथा १ सौर दिन में सूर्य की गति ६० कला (१ अंश) होती है। इस लिये सावन से सौर बड़ा होता है। सारांश यह है कि चान्द्रदिन से बड़ा सावनदिन और सावन से बड़ा सौर दिन होता है। चान्द्र और सौर दिन का प्रारम्भ एव अन्त का एक निश्चित काल नहीं है अत व्यवहार में सावन दिन की ही सर्वाधिक प्रधानता है। सावन दिन का आरम्भ सूर्योदय से होकर द्वितीय सूर्योदय में अन्त होता है। इस कारण इसका निश्चित काल होने से व्यवहारोपयोगि होना उचित ही है॥

सावनदिन संख्या कथन—

पञ्चाङ्गरामास्तिथयः खरामाः सार्धद्विदस्रा कुदिनाद्यमब्दे।
अस्यार्कमासोऽर्कलवः प्रदिष्टस्त्रिंशद्दिनः सावनमास एव ॥७॥

एक सौरवर्ष में ३६५ दिन १५ दण्ड ३० पल और साढ़े बाइस विपल सावन दिनादि होते हैं। इसका बारहवाँ भाग अर्थात् ३० दिन २६ दण्ड १७ पल और ३१।५२।३० विपल दि एक सौरमास सम्बन्धी सावन दिनादि होते हैं। ३० सावनदिन का सावनमास होता है ॥६॥

चन्द्रमास सम्बन्धो सावनदिनादि कथन—

कालेन येनैति पुनः शशीनं क्रामन्भचक्रं विवरेणत्योः।
मासःसचान्द्रोऽङ्कयमाः कुरामाः पूर्णेषवस्तत्कुदिन प्रमाणम् ॥८॥

अमान्तकाल में सूर्य और चन्द्र दोनों एक सूत्र में संसक्त होते हैं अतः दोनों की राश्यादि समान होती है। रवि से चन्द्र की गति अधिक है अतः प्रतिदिन गत्यन्तरतुल्य सूर्य से आगे चन्द्र रहते हैं। पूर्णिमाँ में दोनों का अन्तर छः राशि होता है और फिर अमान्तकाल में सूर्य से चन्द्र मिल जाते हैं। इसी स्थिति को बतलाकर कहा गया है कि जितने समय में सूर्य से आगे गत्यन्तर तुल्य पर भचक्र में घूमता हुआ चन्द्र सूर्य के साथ फिर योग करता है उतने काल को चान्द्रमास कहते हैं। इसका भाव यह हुआ कि एक अमान्त से दूसरा अमान्त पर्यन्त समय का नाम चान्द्रमास है। इस चान्द्रमास में २९ दिन ३१ दण्ड और ५० पल सावनदिनादि होते हैं। ये चान्द्रमास सम्बन्धी कुदिनादि हैं ॥ ॥

द्विविध चान्द्रमास कथन—

चान्द्रोऽपि शुक्लपक्षादिः कृष्णादिर्वेति च द्विधा।
पितृकर्मणि कृष्णादिः शुक्लादिस्त्वन्य कर्मणि ॥९॥

शुक्लादि और कृष्णादि के भेद से चान्द्रमास द्विविध होता है

पितृकर्म याने श्राद्धादि में विशेष रूप से कृष्णादि मास और अन्य कर्म में शुक्लादि चान्द्रमास का ग्रहण होता है ॥६॥

विशेष—श्रुति भी द्विविध चान्द्रमास की पुष्टि करती है "चित्रापूर्णमासे दीक्षेरन् मुखंबा" इससे चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा तिथि को अर्थात् चैत्रीपूर्णिमाँ को पूर्णमास कहा गया है अतः कृष्णादि चान्द्रमास की सिद्धि हुई।

किसी ने निम्न वचन के अनुसार चान्द्रमास का त्रिविध भेद बताया है, जो विचार करने पर असङ्गत जान पड़ता है। निम्न वचन सूर्यसिद्धान्त का है जिसका अर्थ अमान्त से अमान्त पर्यन्त काल का नाम चान्द्रमास होता है।

• *अर्काद्विनिसृतः प्राचीं यद्यात्यहरह शशी।*
तच्चान्द्रमानमंशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः॥

मास शब्द की व्युत्पत्ति—

"मस्यन्ते परिमीयन्ते तिथयो येन स मासः" इसव्युत्पत्ति से चान्द्रमास सिद्ध होता है, क्यों कि चन्द्रमा के द्वारा ही तिथियों का मापन होता है। अमान्त के बाद तिथि बनती है और अमान्त में ही तिथियों का अन्त होता है, अतः इससे शुक्लादि चान्द्रमास की सिद्धि होती है। पाणिनि के अनुसार अदन्त पूर्णमास शब्द से अण् प्रत्यय का विधान होने से तथा "पूर्णमासश्चन्द्रमा" इससे पूर्णिमाँ शब्द मासपूर्ति का बोधक सिद्ध होता है. अतः उक्त युक्ति से कृष्णादि चान्द्रमास की सिद्धि हुई। इस रीति से भी द्विविध चान्द्रमास सिद्ध होता है। मासमीमांसा" में पूर्णोमासोऽस्यामिति पूर्णमास पद-द्योतका पूर्णिमाँतिथिः" यह कहा गया है।

कृष्णादि चान्द्रमास कथन—

कार्तिक्यादिषु संयोगे कृत्तिकादि -द्वयन्द्वयम् ।
अन्त्यौपान्त्यौ पञ्चमश्च त्रिधामासत्रयं स्मृतम् ॥१०॥

यस्मिन् मासे पोर्णमासी येन धिष्ण्येन संयुता ।
तन्नक्षत्राह्वयो मासः कृष्णादिचान्द्र संज्ञकः ॥११॥

कार्तिक आदि मासों की पूर्णिमाँ तिथियों के कृतिका आदि दो दो नक्षत्र और अन्त्य (आश्विन , उपान्त्य (भाद्र) एवं पञ्चम (फाल्गुन) मासों की पूर्णिमाँ के तीन तीन नक्षत्र होते हैं। भावार्थ यह है कि कार्तिकी पूर्णिमाँ में कृतिका-रोहिणी अग्रहण की पूर्णिमाँ में मृगशिर आर्द्रा, पौष पूर्णिमाँ में पुनर्बसु-पुष्य, माघीपूर्णिमाँ में आश्लेषा-मघा, फाल्गुनी पूर्णिमाँ में पूर्व फाल्गुनी-उत्तरफाल्गुनी-हस्त, चैत्रीपूर्णिमाँ में चित्रा-स्वाती, बैशाखीपूर्णिमाँ में विशाखा-अनुराधा ज्येष्ठीपूर्णिमाँ में ज्येष्ठा-मूल आषाढ़ीपूर्णिमाँ में पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ़, श्रावणीपूर्णिमाँ में श्रवणा धनिष्ठा, भाद्रीपूर्णिमाँ में शतभिषा-पूर्वभाद्र-उत्तरभाद्र, और आश्विन की पूर्णिमाँ में रेवती-अश्विनी भरणी नक्षत्र होते हैं। जिस मास की पूर्णिमा तिथि में जो नक्षत्र पड़ता है उस नक्षत्र संज्ञक वह कृष्णादि चान्द्रमास होता है। किसी पूर्णिमाँ में दो नक्षत्रऔर किसी में तीन नक्षत्र कहे गये हैं परन्तु उन नक्षत्रों में प्रधान नक्षत्र वश ही द्वादशमासों का नाम पड़ा है। जैसे कृतिका नक्षत्र युक्त पूर्णिमाँ तिथि से कार्तिक मृगशिर से मार्ग पुष्य से पौष मघा से माघ, पूर्व फाल्गुनी से फागुन, चित्रा से चैत्र, विशाखा से बैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ़ा से आषाढ़, श्रवणा से श्रावण, पूर्वाभाद्र से भाद्र,

और अश्विनी नक्षत्र युक्त पूर्णिमा से आश्विन मास कहा जाता है ॥१०-११॥

विशेष—"नक्षत्रनाम्ना मासास्तु ज्ञेयाः पर्वान्त योगतः" इस सूर्य सिद्धान्तीय बचन के आधार पर पूर्णिमा तिथि में नक्षत्र के योग से ही द्वादश कृष्णादि चन्द्र मासों का नाम चैत्र आदि है। इसी को धर्मशास्त्र में मास चिह्न कहा गया है। जैसे अतः साम्बत्सर श्राद्धं कर्तव्य मासचिह्नितम्'। उक्त पूर्णिमा सम्बन्धी नक्षत्र मध्यम मान से कहे गये हैं, इस कारण स्पष्ट मान से बने हुए पञ्चाङ्ग में किसी वर्ष एक अथवा दो पूर्णिमा में अन्तर पड़ता है जो स्वाभाविक है। इसी तरह के बचन कुछ नीचे लिखे जाते हैं—

मासमीमांसायाम—

अन्त्योपान्त्यौ त्रिभौज्ञेयौ फाल्गुनश्च त्रिभोमतः।
शेषा मासा द्विभाज्ञेयाः कृत्तिकादि व्यवस्थया॥

तथाहि गुरुः—

नक्षत्र द्वितयेऽब्ध्वन्दौ पूर्णे त्वाष्ट्र द्वये ततः।
मासाश्चैत्रादयः षड्भिः षट् सप्तान्त्य त्रिभिर्दिनै॥

नारद

कार्तिकादिषु मासेषु कृत्तिकादि द्वयं द्वयम्।
अन्त्योपान्त्यौ पञ्चमश्च त्रिभं मासत्रयं स्मृतम्॥

मासतत्वे

द्वे द्वे चित्रादिताराणां परिपूर्णेन्दु संगमे।
मासाश्चैत्रादिका ज्ञेया स्त्रिभैः षष्ठान्त्य सप्तमाः॥



धर्मशास्त्र में श्राद्धकृत्य के लिये कृष्णादि चान्द्रमास की ही प्रधानता बतायी गयी है यथा—

चन्द्रवत्परिवर्तेत कालः सूर्यवशाद्यत ।
अतः साम्बत्सरश्राद्धं कर्तव्य मासचिह्नितम् ॥
मासचिह्नं तु कर्तव्यं पौष माघाद्य मेवहि ।
यतस्तत्र विधानेन मासः स परिकीर्तितः ॥

स्मृति में भी कृष्णादि चान्द्रमास का उल्लेख है जैसे—

अथभाद्रपदेमासे कृष्णाष्टम्यां कलौयुगे ।
अष्टाविंशतिमे जातः कृष्णो वै देवकीसुतः ॥
अश्वयुक् कृष्णपक्षे तु श्राद्धं देयन्दिने दिने ।
त्रिभागहीन पक्षे वा त्रिभागं त्वर्द्ध मेव वा ॥

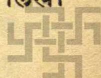
अपरपक्ष (पितृपक्ष) का भी निर्णय उक्त मास से ही किया गया है —

आषाढ़ीमवधिं कृत्वा यः स्यात् पक्षस्तु पंचमः ।
अपरपक्षः स विज्ञेयः कन्यां गच्छतु वा न वा ॥

इस तरह अनेकों प्रमाण द्वारा कृष्णादि चान्द्रमास की सिद्धि होती है। मिथिला एव उत्तरभारत में विशेष रूप से इस मास की प्रसिद्धि है शुक्लादि चान्द्रमास के लिये भी श्रुतिप्रमाण है जैसे —

"सा वैशाखस्यामावास्या भवति या रोहिण्या सम्बध्यत"
इतिश्रुतिः। अत्र रोहिणीपदेन तद्घटितो बृषराशिरभिधीयते ।

उक्तश्रुति से यह सिद्ध होता है कि बृषराशिस्थ सूर्य में यदि बैशाख की अमावास्या तिथि हो तब वह बैशाख मास होता है। इसी तरह का बचन ज्योतिषशास्त्र में है जो आगे लिखा जायगा।



शुक्लादि चान्द्रमास विषयक वचन लघुहारीत का निम्न है।

इन्द्राग्नी यत्र हूयेते मासादिः स प्रकीर्तितः ।
अग्निषोमौ स्मृतौ मध्ये समाप्तौ पितृ सोमकौ ॥

अग्नि और सोम के निमित्त पूर्णिमा में हवन होता है अतः वह मास की मध्य तिथि है तथा पितृ और सोम के लिये अमावास तिथि में हवन होता है, वह मास की अन्तिम तिथि है। इन्द्र और अग्नि के लिये शुक्लपक्ष की प्रतिपद् तिथि में हवन होता है अतः वह मास की पहली तिथि है। इससे स्पष्ट शुक्लादि चान्द्रमास का बोध कराया गया है।

शुक्लादिचान्द्रमास कथन—

मेषादिस्थे सवितरि यो यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः ।
चैत्राद्यः सज्ञेयः पूर्तिद्वित्वेऽधिमासोऽन्त्य ॥१२॥

मेषादिराशिस्थ सूर्य में जिस चान्द्रमास की पूर्ति हो वह मेषादि राशि के क्रम से चैत्र आदि शुक्लादि चान्द्रमास होते हैं। इसका भाव यह है कि मेष राशिस्थ सूर्य में जो अमान्त हो उसमें शुक्लादि चैत्र चान्द्रमास की पूर्ति होती है। बृषस्थ सूर्य में जो अमान्त हो उस में शुक्लादि बैशाखमास की पूर्ति होती है। इसी तरह मिथुनस्थ सूर्य में ज्येष्ठ, कर्कस्थ सूर्य में आषाढ़ सिंहस्थ सूर्य म श्रावण कन्याराशिस्थ रवि में भाद्र, तुलस्थ रवि में आश्विन, बृश्चिकस्थ सूर्य में कार्तिक धनुराशिस्थ रवि में अग्रहण, मकरस्थ सूर्य में पौष, कुम्भस्थ रवि में माघ और मीनस्थ सूर्य की अमावस तिथि में शुक्लादि चान्द्रमास फाल्गुन की पूर्ति समझनी चाहिए। यदि एक राशिस्थ सूर्य में दो अमान्त हो जाय, तब एकराशिस्थ सूर्य में ही दो शुक्लादि

चान्द्रमास की पूर्ति होगी अतः उस स्थिति में पिछलामास अधिमास होता है ॥१२॥

विशेष—शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि से अमावास्या तिथि पर्यन्त-काल का नाम शुक्लादिचान्द्रमास है। किस शुक्लादि चान्द्रमास का नाम क्या होगा इसके लिये उपर्युक्त ब्यवस्था है। कहीं पर मीनादिद्वादशराशिस्थ सूर्य में अमान्त के संयोग से चैत्रादि द्वादश शुक्लादि चान्द्रमासों की ब्यवस्था की गयी है। मीनस्थ रवि में जिस शुक्लादि चान्द्रमास का आरम्भ हो वह चैत्र मेषस्थ-सूर्य में जिस शुक्लादिचान्द्रमास का आरम्भ वह वैशाख एव वृषस्थ सूर्य में ज्येष्ठ होगा। इसी तरह आगे भी जानना चाहिए इसका प्रमाण निम्न है—

मीनादिस्थे रवौ येषामारम्भ. प्रथमे क्षणे।
तेऽब्दे चान्द्रमसामासाश्चैत्राद्या द्वादशस्मृत ः॥

दोनों प्रमाणों से एक ही बात की पुष्टि होती है। केवल कथन का भेद है। पहले मेषस्थ रवि में जिस शुक्लादिचान्द्रमास की पूर्ति-हो उसे चैत्र कहा गया है और दूसरे प्रमाण में मीनस्थ रवि में जिस शुक्लादि चान्द्रमास का आरम्भ हो उसे चैत्र बताया गया है। सभी शुक्लादि चान्द्रमास किसी एक राशिस्थ सूर्य में आरम्भ होकर द्वितीय राशिस्थ सूर्य में समाप्त होते है। अतः किसी ने मासारम्भ कालिक सूर्य राशि से और किसी ने मासान्तकालिक-सूर्य राशिवश शुक्लादिद्वादशचान्द्रमासों की संज्ञा बतायी है। दोनों का कहना ठीक ही है। उदाहरणार्थ मान लीजिये कि— फाल्गुन शुक्ल द्वादशी को मीन की संक्रान्ति और चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को मेष की संक्रान्ति है। इस स्थिति में मीनस्थ सूर्य में चैत्र की अमावस

तिथि होने से उस अमान्तकाल में शुक्लादि चान्द्रमास-फाल्गुन की पूर्ति हुई और प्रतिपदा तिथि के आरम्भ से शुक्लादि चान्द्रमास चैत्र का आरम्भ होना प्रथम प्रमाण से सिद्ध होता है। दूसरे प्रमाण से मीनस्थ रवि में चैत्र शुक्ल प्रतिपद् तिथि होने से शुक्लादि चान्द्रमास चैत्र का प्रारम्भ होना ही सिद्ध हुआ। इस हेतु दोनों मतों से चैत्रमास की ही सिद्धि हुई। पहले प्रकार का पोषक वचन दूसरा निम्नलिखित है—

मेषग रबि सक्रान्तिः शशिमासे भवति यत्र स चैत्रः।
एवं बैशाखाद्याः बृषादि सक्रान्ति योगेन ॥

सौरादि मासों का व्यवहार कथन—

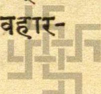
वर्षायनर्तु युगपूर्बक मत्र सौरान्
मासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशु मानात् ।
यत् कृच्छ्र सूतक चिकित्सित वासराद्यं
तत् सावनाच्च घटिकादिक मार्क्षमानात् ॥१३॥

वर्ष अयन ऋतु तथा युग का विचार सौरमान से, मास और तिथियो का विचार चान्द्रमास से, कृच्छ्र (ब्रतादि), अशौच और चिकित्सा का विचार सावन मान से और घटिकादिक-विचार नाक्षत्रमान से होता है ॥१३॥

विशेष— अधिमास और क्षयमास का विचार चान्द्रमास से ही होता है। तदर्थ श्रीपति का बचन निम्न है :

युगायनर्तु प्रभृतीनि सौरान्मानाद् द्युराञ्योरपि बृद्धिहानी ।
पर्बाधिमासोनदिनानि चान्द्रान् तथा तिथेरर्द्धमपि प्रदिष्टम् ॥

निम्न सूर्यसिद्धान्तीय बचन में चान्द्रमास सम्बन्धी व्यवहार-कहा गया है—



तिथिः करणमुद्वाहः क्षौरं सर्वक्रियास्तथा।
व्रतोपवास-यात्राणां क्रिया चान्द्रेण गृह्यते ॥

ब्राह्मपुराणे विशेषः—

बिबाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः।
शेषे कर्मणि चान्द्रः स्यादेषएव बिधिः स्मृतः ॥
तिथि कृत्ये च कृष्णादि ब्रते शुक्लादिमेव च।
बिबाहादौ च सौरादि मास कृत्ये बिनिर्दिशेत् ॥

क्षयाधिमास में शुक्लादि चान्द्रमास का विचार –

मासः शुक्लादिको ग्राह्यः मलमासे तथा क्षये।
सच दर्शद्वयान्तस्थो मासश्चान्द्र प्रकीर्तितः॥१४॥

मलमास और क्षयमास में शुक्लादिचान्द्रमास ग्राह्य है। वह शुक्लादिचान्द्रमास दो अमान्त के बीच रहने वाला है। अर्थात् प्रथम अमान्त से दूसरे अमान्त पर्यन्त काल शुक्लादि चान्द्रमास है ॥१४॥

अधिशेष कथन—

दर्शावधि श्चान्द्रमसोहि मासः सौरस्तु संक्रान्त्यवधिर्यतोऽत :
दर्शाग्रतः सक्रमकालतः प्राक् सदैव तिष्ठत्यधिमासशेषम् ॥१५॥

अमान्त से अमान्त पर्यन्त काल चान्द्रमास है और सक्रान्ति से संक्रान्ति पर्यन्त काल सौरमास है। अमान्त से सक्रान्ति पर्यन्त काल का नाम-अधिशेष है, अर्थात् सौरमास और चान्द्रमास का अन्तर अधिशेष-संज्ञक है ॥१५॥

विशेष—मध्यम और स्पष्ट मान के भेद से अधिशेष दो तरह का होता है। स्पष्टमान से पञ्चाङ्ग बनता है अतः उसमें अमावास्या-तिथि के अन्तकाल से सूर्य संक्रान्ति काल पर्यन्त जो

समय हो वह स्पष्ट अधिशेष है। स्पष्टाधिशेष प्रतिमास में न्यूनाधिक होता है अतः अधिमास वर्षीय पञ्चाङ्ग गणित के बिना निश्चित रूप से अधिमास का ज्ञान नहीं हो सकता। मध्यम सौरमास और चान्द्रमास का अन्तर मध्यमाधिशेष है। यह सर्वदा स्थिर रहता है, अतः उसके वश त्रैराशिक गणित द्वारा मध्यम अधिमास का ज्ञान पञ्चाङ्ग के बिना भी हो सकता है। मध्यम अधिशेष से साधित मध्यम अधिमास यद्यपि ग्राह्य-नहीं होता, फिर भी स्थूल रूप से अधिमास जानने के लिये ज्योतिष-शास्त्र में मध्यमाधिशेष वश मध्यमाधिमास का आनयन किया गया है। मध्यम और स्पष्ट में केवल मास में ही अन्तर होता है, वर्ष में नहीं। इसलिए मध्यमाधिशेष से स्पष्टाधिमास का एक अन्दाज लगाया गया है जो युक्ति-युक्त है। कभी मध्यम और स्पष्ट अधिमास एक ही मास में होते हैं। मध्यम या स्पष्ट अधिशेष जब एक चान्द्रमास के तुल्य होता है तब मध्यम या स्पष्ट अधिमास होता है।

मध्यमाधिशेष का आनयन—

एक सौर मास सम्बन्धी सावनदिनादि ३०।२६।१७।३१।५२।३० इतने हैं और एक चान्द्रमास सम्बन्धी सावन दिनादि २९।३१।५० हैं। दोनों का अन्तर करने पर ०।५४।२७।३१।५२।३० इतने अधिशेषदिनादि होते हैं। यह एक मास सम्बन्धी सौरचान्द्रान्तर रूप अधिशेष है। अथवा एकवर्ष में चान्द्र-दिनादि ३७१।३।५२।३० इतने होते हैं और एक वर्ष में सौर दिन की संख्या ३६० होती है। दोनों का अन्तर करने पर एक वर्ष सम्बन्धी अधिशेषदिनादि ११।३।५२।३० इतने होते हैं। यह अधिशेष जब एक चान्द्रमास के समान होता है तब अधिमास होता है।

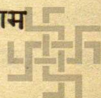
यह मध्यमाधिशेष है अतः इसके वश मध्यम अधिमास का आनयन होता है।

मध्यमाधिमासानयन—

चान्द्रेन सौरेन हृतात्तु चान्द्रादवाप्त सौरैर्दशनैर्दल.द्यैः ।
मासैर्भवेच्चान्द्रमसोऽधिमासः कल्पेऽपिकल्प्या अनुपाततोऽतः॥१६॥

एकमास सम्बन्धी चान्द्रदिनादि को एकमास सम्बन्धी सौरदिनादि में घटाकर शेष से एकमास सम्बन्धी चान्द्रदिनादि में भाग देने पर लब्धि ३२ मास १५ दिन होती है। यह सौरमासादि है अतः प्रत्येक साढ़े बत्तीस महीने पर एक चान्द्रमासात्मक अधिमास होता है। इसी तरह अनुपात द्वारा कल्प का भी अधिमास साधन करना चाहिए ॥१६॥

विशेष— सृष्टिका प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के आरम्भ में हुआ और उस समय सभी ग्रह मेषादि में थे। अत दर्शान्त और मेष की संक्रान्ति एक समय में हुये। उसके बाद पहले दर्शान्त और दर्शान्त के बाद वृष की संक्रान्ति हुई, क्योंकि सौरमास से छोटा चान्द्रमास होता है। सौर और चान्द्रमास का अन्तर अधिशेष होता है अत दर्शान्त के बाद अधिशेष तुल्यकाल आगे वृष की संक्रान्ति होना उचित है। फिर उसकेबाद तृतीय दर्शान्त से आगे द्विगुणित अधिशेष तुल्य काल पर मिथुन की संक्राति होती है। इस तरह बढ़ते-बढ़ते अधिशेष जब एक चान्द्रमास के समान होता है तब सौरमास से एकमास अधिक चान्द्रमास होता है अर्थात् उस वर्ष १३ चान्द्रमास होता है। उसी बढ़ा हुआ चान्द्रमास का नाम अधिमास या मलमास है।



मध्यमाधिमासानयन की युक्ति—

मध्यन एक सौर और चन्द्रमास का अन्तर करने पर मध्यमाधिशेष-दिनादि ०८।५४।२७।३१।५८।३० इतने होते हैं। इस अधिशेष ५८ से अनुपात किया गया कि यदि इस सावनात्मक अधिशेष में एक सौरमास होता है तब एक चान्द्रमास सम्बन्धी सावनदिन में कितने सौरमास होंगे। इस तरह के अनुपात से ३२।१५।३१।८४० इतने सौरमासादि होते हैं। मूल श्लोक में दण्डादि को छोड़ दिया गया है। इस से यह सिद्ध होता है कि मध्यममान से प्रत्येक सावयव साढ़े बत्तीस सौरमास बीतने पर एक अधिमास होता है। इसी तरह एक कल्पवर्ष को आगत सौरमास से भाग देने पर एक कल्प में होनेवाले अधिमासों की संख्या १५९३३००००० इतनी होतीं हैं।

स्पस्टाधिमास का समय निरूपण—

सूर्य और चन्द्र की एक दिन सम्बन्धी परमाल्प और परमाधिक स्पष्टागति को स्थिर मानकर उनके वश सौर और चान्द्रमास का अन्तर करने पर परमाल्प और परमाधिक अधिशेष होते हैं। उन दोनों के वश अनुपात द्वारा २७ और ३६ सौरमास आते हैं। अतः स्पष्टमान से प्रत्येक २७ और ३६ मास के बीच स्पष्टाधिमास होने की सम्भावना होती है। प्रत्येक दिन की स्पष्टागति विलक्षण होती है अतः निश्चित रूप से स्पष्टाधिमास का ज्ञान पञ्चाङ्ग गणित के बिना होना सम्भव नहीं है। निबन्धादि ग्रन्थों में जो अधिमास का समय कहा गया है वह मध्यममान से ही है जैसे—



द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोड़शभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतत्येकोऽधिमासकः ॥
अन्यः— गतेऽब्द द्वितयेसार्धे पञ्चपक्षे दिनत्रये ।
दिवसस्याष्टमे भागे पतत्येकोऽधिमासकः ॥

इन दोनों बचनों में तथा पूर्वोक्ति गणित में जो अन्तर दीख पड़ता है वह गणित की स्थूलता से है। किसी ने सावयव अधिशेष पर से किसी ने अधिशेष का दण्ड तक ग्रहण कर अनुपात किया है अतः प्रत्येक के भागफल में अन्तर होना स्वाभाविक है। अधिशष के तारतम्य से गणित में अन्तर होना उचित ही है।

इष्ट शकाव्द से मध्यमाधिमासज्ञान—

हीनः शकाब्दो गगनाग्निनागैर्नवेन्दुभक्तो यदिशेषकं स्यात् ।
गुणेश शून्याष्ट नृपेषु विश्वे चैत्रादयः सप्ततदाधिमासाः॥१७॥

इष्टशकाब्द में ८३० को घटा कर १९ से भाग देने पर यदि ३।११।० ८।१६।५।१३ शेष बचे तो चैत्रादिमास के क्रम से शेषानुसार अधिमास जानना चाहिये। जैसे इष्टशकाब्द १८६१ ।। इसमें ८३० घटाने पर शेष १०६१ हुआ। इसमें १९ का भाग देने पर शेष १६ बचा, अतः श्रावण में मध्यमाधिमास आया, परन्तु स्पष्टमान से आषाढ़ में अधिमास होता है। इसलिये मध्यमाधिमास व्यवहारोपयुक्त नहीं होता ॥१७॥

विशेष—दो अमान्त के बीच जब सूर्य की संक्रान्ति नहीं होती है तब उस मास में अधिमास होता है। इस स्थिति में सौरमास से चान्द्रमास छोटा होता है। वर्तमान समय में मिथुनराशि के १८ वाँ अंश में सूर्य-मन्दोच्च है अतः मेषादिराशिस्थ सूर्य का सावनात्मक सौरमास बनाने पर प्रत्येक मास

का मान विभिन्न आता है। उनमें वृश्चिक, धनु और मकर राशिस्थ सूर्य का सावनात्मक सौरमास का मान सावनात्मक चान्द्रमास के मान से छोटा होता है। तुला और कुम्भराशिस्थ रवि का मासमान चान्द्रमास से कुछ ही बड़ा है अतः स्पल्पान्तर से उन्हें छोड़कर केवल मीनादि सप्तराशियों के मान ग्रहण कर चैत्रादि सप्तमासों में अधिमास होने की संभावना कही गयी है। किसी ने केवल पौष को छोड़कर सभी मासों में अधिमास होना बताया है। पौषमास का मान अन्य सौरमासों की अपेक्षा एवं चान्द्रमास से भी छोटा है अतः पौष में अधिमास की सभावना नहीं है जैसे—

दशानां फाल्गुनादीनां प्रायो माघस्य च क्वचित् ।
नपुंसकत्वं भजते न तु पौषस्य कुत्रचित् ॥

पुन स्पष्टमान के अनुसार कहा गया है—

सर्वेषमासेष्वधिमासकःस्यात् तुलादिषट्केऽपि च शून्यमासः ।
संसर्पकः सम्भवोऽहिमासः सर्वेऽपिचैते खलुनिन्द्यमासाः ॥

अधिमास सभव का लक्षण—

कृष्णपक्षे नवम्यादौ मेषार्को यत्र जायते ।
तद्वर्षे मलमासः स्याच्छुभ कर्मसु निन्दितः ॥

द्वादश सौरमास सम्बन्धी सावनदिनादि बोधक चक्रम् ।

रा०	मे०	वृ०	मि०	कर्क	सि०	कन्या	तु०	वृश्चिक	ध०	म०	कु०	मी:
दिन	३०	३१	३१	३१	३१	३०	२९	२९	२९	२९	२९	३०
दण्ड	५५	२४	३७	२८	२	२९	५७	०७	१५	२४	४९	२
पल	३३	५६	३२	३५	५२	४	२	३९	३	००	४३	३१

स्पस्टाधिमास का लक्षण—

अमावास्या द्वयं यत्र रविसंक्रान्ति वर्जितम् ।
मलमासः स विज्ञेयो मासः शुद्धाख्य उत्तरः ॥१८॥

दो अमावस तिथियों के बीच यदि स्पस्टरबि की सक्रान्ति न हो तब अधिमास होता है । अधिमास में ६० दिन का एक मास होता है, उसमें उत्तरमास शुद्ध और पूर्व का ३० दिन शुभ कर्म में निन्दित है ॥१८॥

विशेष—सिद्धान्त शिरोमणि में कहा गया है जो असंक्रान्ति

मासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्" अर्थात् स्पस्टमान से सूर्यसक्रान्ति से हीन चान्द्रमास अधिमास है । चान्द्रमास का लक्षण है "अमान्तादमान्तावधि श्चान्द्रमासः" अर्थात् अमान्त से अमान्त पर्यन्त जो काल वह शुक्लादि चान्द्रमास है । अधिमासादि में शुक्लादि चान्द्रमास ही ग्राह्य है ·यह पहले लिखा गया है। मलमास में ६० दिन का एक ही मास होता है क्यों कि शुक्लादिचाँद्रमास के लक्षण से दूसरा मास सिद्ध नहीं होता । स्पस्ट प्रतीति केलिये उदाहरण यह है कि जैसे- संवत् २०२० में आश्विन कृष्णामान्त से पूर्व कन्या की संक्रान्ति हुई और तदग्रिम अमान्त के बाद तुला की संक्राँति हुई । यहाँ दो अमान्तों के बीच स्पष्टरवि की संक्रान्ति न होने से अधिमास हुआ । 'मेषादिस्थे सवितरि यो यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः' इस उक्त शुक्लादि चाँद्रमास के लक्षण से कन्याराशिस्थ रवि में आश्विनकृष्णामान्त होने से वहाँ शुक्लादि चान्द्रमास भाद्र की पूर्ति हुई और तदग्रिम अमान्त में तुलस्थरवि न होने के कारण आश्विनकृष्णामान्त से तृतीय अमान्त में शुक्लादिचाँद्रमास

आश्विन की पूर्ति हुई. अतः ६० दिन का आश्विनमास हुआ। जिसमें पहले का ३० दिन अधिमास (मलमास) और पिछले का ३० दिन शुद्ध हुआ। इस कारण धर्मशात्र में लिखा है कि-

षष्ट्या तु दिवसैर्मासः कथितो बादरायणैः।
पूर्वार्द्धं सम्परित्यज्य उत्तरार्द्धे क्रिया भवेत्॥

पाराशरः- रविणालंघितोमासश्चान्द्रः ख्यातो मलिम्लुचः।
तत्रयद्विहितं कर्म उत्तरेमासि कारयेत्॥

गृह्यपरिशिष्टे-पक्षद्वयेऽपि संक्रान्तिर्यदि न स्यात् सितासिते।
तदातन्मास विहित-मुत्तरे मासि कारयेत्॥

स्पस्टाधिमास की प्रधानता कथन-

स्पस्टोऽधिमासः पतितोऽप्यलब्धो,यदा यदा बाऽपतितोऽपिलब्धः।
सेकैर्निरेकैक्मशोऽधिमासै-स्तदादिनौघः सुधिया प्रसाध्यः ॥१६॥

स्पष्टमान से यदि अधिमास हो और मध्यममान से न हो तो, अहर्गणानयन में अधिमास की संख्या में एक जोड़कर और यदि मध्यममान से अधिमास हो और स्पस्टमान से न हो तब एक घटाकर अहर्गण-बनाना चाहिये। इससे स्पस्ट होता है कि ज्यौतिषशास्त्र के अनुसार स्पस्टाधिमास की ही प्रधानता है। मध्यममान केवल एक माप दण्ड मात्र ही है, कार्य का नहीं। धर्मशास्त्रीय विचार भी स्पष्टमान से होता है ॥१६॥

विशेष—मध्यममान से साढ़े बत्तीस मास पर और स्पस्टमान से २७-३६ मास के बीच अधिमास होता है। यदि मध्यममान की प्रधानता होती तो सभी अधिमास साढ़ेबत्तीस मास पर

ही होते, लेकिन वैसा नहीं होता है। इसलिये स्पस्टमान से ही अधिमास और क्षयमास होते हैं। विशेष प्रतीति के लिये नीचे अधिमास की सारिणी दी जाती है, कृपया पाठकगण सारिणी को देखकर बिचार करें कि अधिमास कितने मासों पर होता है।

स्पस्टाधिमास बोधक सारिणी—

सवत्	मास	संवत्	मास	संवत्	मास	संबत्	मास
१९८०	ज्येष्ठ	२००७	आषाढ़	२०३४	आषाढ़	२०६१	श्रावण
१९८३	चैत्र	२०१०	बैशाख	२०३७	ज्येष्ठ	२०६४	ज्येष्ठ
१९८५	श्रावण	२०१२	भाद्र	२०३९	अश्विन	२०६७	बैशाख
१९८८	आषाढ़	२०१५	श्रावण	२०४२	श्रावण	२०६९	भाद्र
१९९१	बैशाख	२०१८	ज्येष्ठ	२०४५	ज्येष्ठ	२०७२	आषाढ़
१९९३	भाद्र	२०२०	आश्विन	२०४८	बैशाख	२०७५	ज्येष्ठ
१९९६	श्रावण	२०२३	श्रावण	२०५०	भाद्र	२०७७	आश्विन
१९९९	ज्येष्ठ	२०२६	आषाढ़	२०५३	आषाढ़	२०८०	श्रावण
२००२	चैत्र	२०२९	बैशाख	२०५६	ज्येष्ठ	२०८३	ज्येष्ठ/
२००४	श्रावण	२०३१	भाद्र	२०५८	अश्विन	२०८५	कार्तिक

नोट - सवत २०२१ के चैत्र में, सं २०३९ के फाल्गुन में और स० २०८९ के चैत्र में भी अधिमास हैं। ये अधिमास क्षयमास जनित हैं। क्षयमासीय वर्ष में दो अधिमास होते हैं। अतः इसका बिबरण आगे क्षयमास प्रकरण में दिया जायगा।

अधिमास में त्याज्य कर्म कथन –

अग्न्याधेयं प्रतिष्ठाञ्च यज्ञदानव्रतानि च ।
देवव्रत वृषोत्सर्ग चूड़ाकरणमेखला: ॥२०॥
माङ्गल्यमभिषेकं च मलमासे विवर्जयेत् ।
त्यजेद्दानं महादानं व्रत देवविलोकनम् ॥२१॥
वापीकूपतड़ागादि-प्रतिष्ठा यज्ञकर्म च ।
मलिम्लुचे त्वनाघ्रतं तीर्थस्नानमपि त्यजेत् ॥२२॥

अधिमास में अग्न्याधान, देवप्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, व्रत, देवव्रत, वृषोत्सर्ग, चूडाकरण, यज्ञोपवीतसंस्कार, मांङ्गल्यकर्म, अभिषेक, तुलादिमहादान, प्रथमदेवदर्शन, बावली, कूप, तड़ागादिप्रतिष्ठा, यज्ञादिकर्म और प्रथमतीर्थस्नान त्याज्य हैं २०-२१

अधिमासीय कर्तव्यकर्म—

नित्य नैमित्तिके कुर्यात्प्रयतः सन्मलिम्लुचे ।
तीर्थस्नानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च ॥२३॥
गर्भे बाधु षिक्रत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु ।
सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः ॥२४॥

अधिमास में सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म, ग्रहणशान्त्यादि-निमित्तक-नैमित्तिक स्नानादि कर्म द्वितीय वार का तीर्थस्नान, गजच्छायायोगनिमित्तिकश्राद्ध, प्रेतस्नान, गर्भाधान, ऋणादि में बाधु षिक्रत्य, दशगात्रपिण्डदान एवं श्राद्ध करना चाहिये ॥२३-२४॥

विशेष— प्रथम वार्षिक श्राद्ध मलमास में करना चाहिये यथा—"असंक्रान्तेऽपि कर्तव्यमाब्दिकं प्रथमं बुधैः"। यदि

अशौचान्तर से आब्दिक श्राद्ध प्रतिबन्धित हो तो अशौचान्त में मलमास-होने पर भी उसमें आब्दिक श्राद्ध करना चाहिये। जैसे— प्रतिसंवत्सरं श्राद्ध मशौ चात्पतित च यत्। मलमासेऽपिकर्तव्यमिति भागुरिरब्रवीत्"॥

श्राद्धकृत्य में विशेष विचार—

मरणमास से द्वादशमास के बीच या मरणतिथि से एकादश मास के मध्य मलमास होने से श्राद्ध में एकमास की बृद्धि होती है। मलमासीय शुक्लपक्ष में अर्थात् प्रथम पक्ष में मृत व्यक्ति के श्राद्ध में मासिक बृद्धि होती है और कृष्णपक्ष अर्थात द्वितीय पक्ष में नहीं। इसलिये मलमासीय कृष्णपक्ष में मृत ब्यक्ति का वार्षिक श्राद्ध अग्रिम वर्ष के मरण मास के कृष्णपक्ष में पहले और शुक्लपक्षीय का पीछे होता है। 'मासमीमांसा' में संवत्सराभ्यन्तरे मलमास पाते मासिकार्थं दिनमेकंवर्धयेत्" इस सूत्र के अर्थ में पात शब्द का अर्थ सन्धिकाल (मलमासीय पूर्णिमा तिथि का अन्तिम और तदुत्तर प्रतिपत्तिथि का आदिम जो क्षणद्वयात्मकलब किया गया है। इसलिये मरणदिन के बाद संवत्सर-के मध्य यदि वह सन्धिकाल पड़े तब मासिक-बृद्धि होती है। अन्यथा नहीं। ऐसा नहीं मानने पर 'हारीतक' का जो अधिमास घटक चान्द्रमास के लक्षण में पूर्णिमाँ मध्यकत्वपद है वह ब्यर्थ हो जायगा। विशेष जिज्ञासुओं को उक्तग्रन्थ देखना चाहिए।

अधिमास का फल—

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं चैत्रे तु सुहितः प्रजा।
वृष्टिः सुभिक्षं बैशाखे ज्वरातीसार सभवः॥



रोगपीड़ा भवेज्ज्येष्ठे यज्ञदानादिकं वहु ।
यशः पुण्यं सुभिक्षं च द्विराषाढ़े महत्सुखम् ॥
सर्वकाम समृद्धिःस्यात् श्रावणे शूद्रबृद्धय: ।
विरोधः क्षत्रियाणां तु युद्ध भाद्रपदे विदु: ॥
आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीड़ीताः प्रजाः ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणा पथे ॥
राजानस्तत्र नश्यन्ति बृद्धिर्ब्राह्मणजातिषु ।
द्विकार्तिकं शुभं धान्यं सन्तुष्टाः सकलाः प्रजाः॥
नानायज्ञाः प्रबर्तन्ते विप्रेभ्योबृद्धिरूत्तमा ।
मार्गशीर्षेसुभिक्षंतु निरोगाः सकलाः प्रजा ॥
राजान्यत्व सुभिक्षं च फाल्गुने जायते सुखम् ।

नोट–ज्येष्ठ, भाद्र और आश्विन का अधिमास बिशेष अशुभ होता है. शेष मासों का अधिमास शुभ प्रद है। पौष और माघ में अधिमास होने की सभावना नहीं होती अतः उक्त पद्य में पौष एवं माघ का फल नहीं है।

क्षयमास का लक्षण—

स्फुटमानेन सूर्यस्य यदा संक्रमणद्वयम् ।
भवेद्दर्शद्वयान्तस्थे क्षयमासस्तदा भवेत् ॥२५॥
क्षयमासीय वर्षे तु क्षयात्पूर्वं तथा परम् ।
अधिमास द्वयं तत्र भवेन्मास त्रयान्तरे ॥२६॥

दो अमान्त के बीच अर्थात् एक शुक्लादिचान्द्रमास के मध्य यदि स्पस्टरबि की दो संक्रान्ति हो तब क्षयमास होता है। जिस वर्ष क्षयमास होता है उस वर्ष में क्षयमास से पूर्व और पर क्रम से तीनमास के भीतर दो अधिमास होते हैं अर्थात् क्षयमास से पहले एक अधिमास और क्षयमास के बाद दूसरा अधिमास होता है ॥॥२५-२६॥

विशेष—चान्द्रमास से जब सौरमास छोटा होता है तब एक चान्द्रमास में स्पष्टरबि की दो संक्रान्ति होने से क्षयमास होता है। अधिमास की तरह क्षयमास का निश्चित समय नहीं है। जिस वर्षान्त में २१ शुद्धि (अधिशेष) होती है उस के अग्रिम वर्ष में क्षयमास होने का सभव होता है। ज्योतिष सिद्धान्त के अनुसार १४१।१२२। ६०।१६।४६।८५।३८।६५।७६ ।१३।३३।२६ इन वर्षों पर क्षयमासीय वर्ष के बाद क्षयमास होने की सम्भावना होती है। मध्यममान से सर्वदा चान्द्रमास से सौरमास बड़ा ही होता है, अतः मध्यममान से क्षयमास नहीं होता। स्पष्टमान से चान्द्रमास से सौरमास छोटा होता है, अतः स्पष्टमान से ही क्षयमास होता है। स्पष्टरबि की गति जब परमाधिक होती है तब सौरमास से चान्द्रमास बड़ा ह ता है यह स्थिति नींचराशि के आसन्न में होती है।

वर्तमान समय में सूर्यमन्दोच्च मिथुनराशि के १८ वें अंश में है, अतः धनुराशि के १८ वें अंश में नींच हुआ। इसलिये गणित द्वारा बृश्चिकराशि के १३ अ श से मकरराशि के २३ अंश तक स्पष्टरबि में चान्द्रमास सम्बन्धी सावनदिन की संख्या से सौरमास सम्बन्धी सावनदिन की सख्या अल्प होती है, अतः कार्तिकादित्रय में अर्थात् मार्ग, पौष और माघ इन मासों में क्षयमास होने की सम्भावना होती है। वस्तुतः रबिमन्दोच्च की गति स्थिर नहीं है अतः अन्य मासो में भी कालान्तर में क्षयमास हो सकता है। जिस वर्ष क्षयमास होता है उस वर्ष क्षयमास से पूर्व और पर दो अधिमास होते हैं। इस बिषय पर ज्योतिष सिद्धान्तों के कुछ बचन नीचे दिये जाते हैं।

सिद्धान्त शिरोमणौभास्कराचार्यः—

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्
तदावर्षमध्येऽधिमास द्वयं च ॥

सिद्धान्ततत्त्वबिबेके कमलाकरः—

असंक्रान्ति मासोहि चान्द्रोऽधिमासो
द्विसंक्रान्ति मासः क्षयाख्यस्तदानीम् ।
क्षयाख्यः कदाचित् ततः प्राक् च पश्चात्
अवश्यं हि तत्राधिमास द्वयं च ॥

सिद्धान्त सार्वंभौमे मुनीश्वरः—

क्षयमासात्पूर्बकालेऽग्रे च मासत्रयावधि ।
अधिमास द्वयंतत्र स्यादाद्यो गणितागतः ॥

मकरन्द प्रकाशे—

चान्द्रोमासः सूर्य संक्रान्ति हीनो
यः स्यात् प्रोक्तः सोऽधिमासो हि पूर्वैः ।
यस्मिन् चान्द्रेमासि संक्रान्ति युग्मं
प्राहुर्विज्ञा स्तं क्षयाख्यं च मासम् ॥



क्षयमास बोधक सारिणी—

सवत्	मल०	क्षय०	मल०	संवत्	मल०	क्षय०	मल०
१२५०	आश्विन	मार्ग	चैत्र	२१४२	कार्तिक	कार्तिक	फा
१३१५	कार्तिक	मार्ग	बैशाख	२१६१	अश्विन	मार्ग	चैत्र
१३३४	कार्तिक	मार्ग	फा०	२१८०	भाद्र	पौष	फा०
१३७२	कार्तिक	कार्तिक	फा०	२२२६	कार्तिक	मार्ग	चैत्र
१३९१	आश्विन	मार्ग	फा०	२२४५	कार्तिक	पौष	फा०
१४३७	कार्तिक	कार्तिक	बैशाख	२२८३	कार्तिक	मार्ग	फा०
१४५६	कार्तिक	मार्ग	चैत्र	२३०२	अश्विन	मार्ग	फा०
१५३२	आश्विन	पौष	फा०	२३६७	अश्विन	मार्ग	चैत्र
१५७८	कार्तिक	कार्तिक	बैशाख	२५०८	अश्विन	मार्ग	चैत्र
१५९७	आश्विन	मार्ग	चैत्र	२६४८	अश्विन	मार्ग	चैत्र
१७३८	आश्विन	मार्ग	चैत्र	२६६८	आश्विन	पौष	फा०
१८७९	आश्विन	मार्ग	चैत्र	२७९०	आश्विन	मार्ग	चैत्र
२०२०	आश्विन	मार्ग	चैत्र	२८०९	आश्विन	पौष	फा०
२०३९	आश्विन	पौष	फा	२९३१	आश्विन	मार्ग	चैत्र
२०८५	कार्तिक	मार्ग	चैत्र	२९५०	आश्विन	पौष	फा०
२१०४	मार्ग	मार्ग	फा०	२९६९	कार्तिक	मार्ग	चैत्र

नोट— उपरोक्त सारिणी देखने से स्पष्ट ज्ञात होगा कि क्षयमासीय वर्ष में क्षयमास से पूर्व और पर निश्चित रूप से दो अधिमास होते हैं। क्षयमास से अग्रिम का अधिमास क्षयमास जनित है। यदि क्षयमास न हो तो केवल पूर्व का ही अधिमास होगा।

अधिशेष से क्षयमासीय वर्ष में दो अधिमास का निर्णय–

क्षयमास में प्रथम अमान्त के बाद प्रथम संक्रान्ति और द्वितीय अमान्त से पहले द्वितीय संक्रान्ति होती है। अमान्त से संक्रान्ति पर्यन्तकाल का नाम अधिशेष है, अतः प्रथम अमान्त से प्रथम संक्रान्ति पर्यन्त जो अल्प अधिशेष वह सूचित करता है कि इससे पहले अधिमास हो गया है और प्रथम अमान्त से द्वितीय संक्रान्ति पर्यन्त जो बृहत् मासासन्न अधिशेष वह सूचित करता है कि आगे निकट में अधिमास होगा। इस हेतु क्षयमासीय वर्ष में दो अधिमास होना युक्तियुक्त है। भास्कराचार्य ने लिखा है कि "यदाकिलैकविंशतिः शुद्धि-स्तदा भाद्रपदोऽधिमासः। तस्मिन् जाते कार्तिकादित्रये क्षयमासः सम्भाव्यते। इसका उदाहरण यह है कि शाके १८८४ के वर्षान्त में कल्पादि से वर्ष की संख्या १९७२९४९०६३ इतनी है। इस पर से "द्विधाब्दा द्विरामैः खरामैश्च भक्ता" इस श्लोक के अनुसार गणित करने पर गताधिमास की संख्या ७ ७९६१९-७७ इतनी आती है और अधिशेषदिनादि २०।५९।७३ इतनी होती है। यहाँ २१ दिन से अधिशेष कुछ-न्यून है अतः शाके १८८५ के आश्विन में अधिमास और अग्रहण का क्षय होकर चैत्र में दूसरा अधिमास हुआ है।

क्षयमासीय कृत्य की व्यवस्था–

एक एव यदा मासः संक्रान्ति द्वय संयुतः।
मासद्वयगतं कार्यं तस्मिन्नेव प्रशस्यते ॥२७॥
तिथ्यर्धे प्रथमे पूर्वो द्वितीयेर्धे तथोत्तरः।
मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ क्षयमासस्य मध्यगौ ॥२८॥

एक चान्द्रमास में अर्थात् दो अमान्तों के बीच दो रबि की सक्रान्ति होने से एक शुक्लादि चान्द्रमास का क्षय होता है। जैसे शाके १८८५ सनाब्द १३७१ के मार्गकृष्णामान्त और तदुत्तर अमान्त के बीच धनु और मकर की संक्रान्ति हुई, अतः वृश्चिकस्थरबि में मार्गकृष्णामान्त होने से शुक्लादिचान्द्र-मास के लक्षणानुसार वहाँ शुक्लादि चान्द्रमास कार्तिक की पूर्ति हुई और मकरस्थरबि में तदुत्तर दूसरा अमान्त होने से पौषमास की पूर्ति हुई। धनुसंक्रान्ति में कोई अमान्त न होने से तत्प्रयुक्त शुक्लादि चान्द्रमास मार्गशीर्ष का क्षय हुआ। इस स्थिति में क्षयमार्ग और पौष दोनों मासों का कार्य एक ही मास में होगा। क्षय का अर्थ लोप (अभाव) नहीं है, किन्तु अल्पपरिमाण बोधक है। जिस तरह तिथि क्षयादियों में उनके मान रहते ही हैं, उसी तरह मासक्षय में मास का मान रहता ही है। इसलिये कहा गया है कि—एक चान्द्रमास में दो संक्रान्ति होने से दोनों मासों के कार्य एक ही मास में होते हैं। क्षयमास के बीच प्रत्येक तिथि के पूर्वार्द्ध में प्रथममास का कार्य और उत्तरार्ध-में द्वितीयमास का कार्य होता है।

उक्त उदाहरण में शुक्लादि मार्ग का क्षय है, अतः मार्ग-के बाद पौष शुक्ल होगा। उसमें प्रत्येक तिथि के पूर्वार्द्ध में मार्गशुक्ल का कार्य और उत्तरार्द्ध में पौष शुक्ल का कार्य होगा। इसी तरह माघकृष्ण के प्रत्येक तिथि के पूर्वार्द्ध में पौषकृष्ण का कार्य एवं उत्तरार्द्ध में माघकृष्ण का कार्य होगा। इसतरह क्षय शुक्लादिमार्गमास और पौष दोनों मिलकर एक मास है। क्षयमासीय वर्ष में दो मास मिलकर एकमास होता है और दो अधिमास होते हैं। कुल मिलाकर १३ मास का वर्ष होता है ॥२७-२८

विशेष— 'सिद्धान्त शिरोमणि' में कहा गया है कि एक चान्द्रमास में दो संक्रान्ति होने से दो चान्द्रमास होते हैं जैसे 'एकस्मिन् मासे संक्रान्ति द्वयेजाते सति मासयुगल जातम्"। मुहूर्तचिन्तामणि में भी लिखा है—

स्पष्टार्क संक्रान्ति विहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु ।
द्विसंक्रमस्तत्र विभागयोस्तस्तिथेर्हिमासौ प्रथमान्त्य संज्ञौ ॥

कतिपय मासयुग्मबिषयक बचन निम्न हैं

मुनीश्वरः द्विमास संज्ञकात् क्षयात् क्षयाभिधो मुनीश्वरः ।

महेश्वरः—यत्रमासि रबि संक्रमद्वयं तत्र मासयुगलं क्षयाह्वयम् ।
ब्योमराम दिवसैर्भवेच्छुभे यज्ञकर्मणि च वर्जयेत्तु तम् ॥

गारुड़े—एक एव यदा मासः संक्रान्तिद्वय संयुतः ।
मासद्वयगतं श्राद्धं क्षयमासे प्रशस्यते ॥

वटेश्वरः— यदि न चलति बै मासयुग्मं विचिन्त्यम् ।

स्मृतौ— द्वे संक्रान्ती क्षयः स स्यात् एकोऽपि द्वयात्मको भवेत् ।

अन्यः— एक एव यदा मास संक्रान्तिद्वय संयुतः ।
मासद्वयगतं श्राद्धं तस्मिन्नेव प्रशस्यते ॥

ब्याघ्रपादः—तिथ्यर्द्धे प्रथमे पूर्वे अपरस्मिन् परस्तथा ।
मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ क्षयमासस्य मध्यगौ ॥

श्रुति में १४ मास का संबत्सर कहा गया है जैसे— 'मधुश्च माधवश्च शुक्रश्च शुचिश्च नभश्च इषश्च उर्जश्च सहश्च सहस्यश्च तपश्च तपस्यश्च संसर्पोऽहं स्पत्यायत्वा' इति कृष्ण यजुर्वेद तै० शा० २१।४।१४। शुक्ले तु संसर्पाय स्वाहा, मालिम्लुचाच स्वाहा, नभसे स्वाहा, नभस्याय स्वाहा, ईषयाय स्वाहोर्जायस्वाहा, सहसे स्वाहा, सहस्याय स्वाहा,

तपसे स्वाहा, तपस्याय स्वाहा, अंहस्पतये स्वाहा, ऋतुग्रह: संबत्सरस्य द्वादशमासः संवत्सरः चतुर्दश वा मासस्त्रयोदश, मैत्रायणी संहिता ४।६।७ कृ० यजु० ।

क्षयमासीय वर्ष में दो अधिमास मानने पर यदि कोई १४ मास की आपत्ति करे तो उसके लिये उक्तवेद का प्रमाण पर्याप्त है। वस्तुतः मासद्वयात्मक क्षयमास ३० दिन का होने से क्षयमासीय वर्ष में भी १३ मास का ही संवत्सर होता है। वेद से भी दो अधिमास सिद्ध होते हैं क्यों कि क्षयमास से पूर्वका अधिमास संसर्प और पर अधिमास का नाम मलिम्लुच तथा क्षयमास का नाम अंहस्पति है। तीनों के नाम वेद में स्पष्ट हैं।

क्षयमास में त्याज्य कर्म—

यद्वर्षमध्येऽधिक मासयुग्मं तत्कार्तिकादित्रितये
क्षयाख्यम्। मासत्रयं त्याज्यमिदं प्रयत्नात्—
विवाह यज्ञोत्सव मंगलेषु ॥२६॥

जिस वर्ष दो अधिमास होते हैं, उस वर्ष कार्तिकादि त्रयमास में क्षयमास होता है। ये तीनों बिवाह, यज्ञ, उत्सव और मङ्गलकार्य में त्याज्य हैं ॥२६॥

विशेष— धर्मशास्त्र में भी वेदानुकूल अधिमास और क्षय-मास के नाम हैं। तीनों मङ्गल कार्य के लिये निन्द्य हैं कुछ बचन नीचे दिये जाते हैं—

बार्हस्पत्ये यस्मिन् मासे न सक्रान्तिः संक्रान्ति द्वयमेव वा॥
असंस्पर्शौतु तौ मासौ लुप्तमासश्च निन्दितः॥

वशिष्ठः— बापीकूपतड़ागादि प्रतिष्टा यज्ञ कर्म च।
न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पांहस्पतौतथा ॥

मरीचिः— गृहप्रवेश गोदान स्थानासन महोत्सवम्।
न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पांहस्पतौ तथा ॥

कृत्यशिरोमणौ- वस्तुतस्तु यद्वर्षे क्षयाख्यमासस्तत्र
पूर्बापरमधिमासद्वयं तत् त्रितयमपि-
सर्वकर्म वहिस्कृतम्।

किसी ने क्षयमासवर्षीय अधिमास को भानुलंघित कहा है, परन्तु वह भी मङ्गलकार्य में त्याज्य है यथा—

चूड़ा मौञ्जीबन्धनं च अग्न्याधेयं महालयम्।
राज्याभिषेकं काम्यं च नो कुर्याद्भानुलंधिते ॥

भीमपराक्रमे-अधिमासेदिन-पाते धनुषिरबौ भानुलंधिते मासि।
चक्रिणिसुप्ते कुर्यान्नो माङ्गल्यं बिबाहश्च ॥

कश्यपः— मासौन्यूनाधिकौतौतु सर्वकर्मबहिस्कृतौ।

कन्यास्थित सूर्य में मलमास हो तो, तुलार्क में ही देव पितृ-सम्बन्धी कर्म करना चाहिए। जैसे पितामह का बचन—

मासिकन्यागते भानुरसंक्रान्तो भवेद्यदि।
दैवं पैत्र्यं तदा कर्म तुलार्केकतु रक्षयम् ॥

अपवाद बचनों का विचार—

एकस्मिन्नेव बर्षेतु द्वौ मासावधिमासकौ।
प्रकृतस्तत्र पूर्वः स्यादुत्तरस्तु मलिम्लुचः ॥

एकवर्ष में दो अधिमास होनेपर प्रथम अधिमास प्रकृत अर्थात् स्वाभाविक है, जो प्रत्येक तृतीय वर्ष में होता है और दूसरा

मलिम्लुच है। क्षयमास से पूर्व जो अधिमास होता है वह गणितागत है, यह ज्योतिष सिद्धान्त से सिद्ध है जैसे—

क्षयमासात्पूर्वकालेऽग्रे च मासत्रयावधि।
अधिमासद्वय तत्र स्यादाद्यो गणितागतः॥

कुछ निबन्ध कारों ने प्रकृत का अर्थ शुद्ध किया है जो ज्योतिष गणित के विरुद्ध है। भीम पराक्रम में लिखा है "एकत्रमास-द्वितय यदिस्याद् वर्षेऽधिकं तत्र परोऽधिमासः" इसकी व्याख्या में वहाँ लिखा है कि "असंक्रान्तमासयोर्मध्ये पूर्वस्य कर्मण्यत्वं प्रति प्रसौति न तु वृद्धिं निषेधति" इससे स्पष्ट होता है कि क्षय-मासीय वर्ष में दो अधिमास अवश्य होते हैं। पूर्वाधिमास का नाम संसर्प है, अतः संसर्प में जो कार्य त्याज्य होंगे वे उसमें नहीं किये जायगें लेकिन सामान्य अधिमास के त्याज्य कर्म इसमें हो सकते हैं। यह ग्रन्थकार का आशय है। राजमार्त्तण्ड में पूर्वाधिमास को ही निन्द्य बताया है यथा—

अमावास्या द्वयं यत्र मासि मासि प्रवर्तते।
उत्तरश्चोत्तमो ज्ञेयः पूर्वस्तत्र मलिम्लुचः॥

आर्षवचनानुसार क्षयमासीय वर्ष के द्वितीयाधिमास रवि चन्द्र की विलक्षण स्पष्टागति जनित है अर्थात् औत्पातिक है। क्योंकि सामान्य गणित द्वारा एक वर्ष में दो अधिमास नहीं हो सकते। क्षयमास के कारण ही चन्द्र-सूर्य की स्पष्टागतिवश अल्प ही काल में एक चान्द्रमास के तुल्य अधिशेष हो जाता है, जो द्वितीय अधिमास का हेतु है। अतएव कहा गया है—

एकस्मिन्नप्यब्दे यत्रैतल्लक्ष्म दृश्यते उभयोः।
तत्रोत्तरोऽधिमासः स्फुटगत्या भवति चार्केन्द्वोः॥

कुछलोग निम्नबचनके अनुसारपूर्वाधिमासको प्रशस्त समझकर

अधिमास नहीं मानना चाहते। परन्तु प्रशस्त का अर्थ प्रसिद्ध अर्थात् गणितागत है। इसकी पुष्टि पहले की गयी है। अतएव निम्न बचन का अर्थ यह है कि एक वर्ष में दो अधिमास होने से पहला प्रसिद्ध गणितागत है और दूसरा अधिमास है। प्रथमाधिमास की अपेक्षा दुसरा विशेष औत्पातिक है, अतः द्वितीय की अपेक्षा प्रथम गौण है अर्थात् सामान्य दुष्ट है। इसलिये प्रथम को प्रशस्त और द्वितीय को अधिमास कहा है जैसे—

एकस्मिन्नपि वर्षे चेद् द्वौमासावधिमासकौ।
पूर्वोमासः प्रशस्तः स्यादपरस्त्वधिमासकः॥

क्षयमासीय वर्ष में दो अधिमास नहीं मानने पर दोष--

क्षयमास से पूर्वाधिमास को न मानने पर चान्द्रमास की व्यवस्था ठीक नहीं रहेगी। धर्मशास्त्र में कहा गया है कि "अतः संवत्सरं श्राद्धं कर्तब्यं मास चिह्नितम्"। पूर्णिमा और नक्षत्र के योग से कृष्णादिचान्द्रमास की ब्यवस्था जो पूर्व में लिखी गयी है वही मास चिह्न है। उसके बिना मास का ज्ञान न होने पर सभी धर्मकृत्य लोप हो जायगें। उदाहरण यह है कि शाके १८८५ सनाब्द १३७१ के मार्गशीर्ष का क्षय होने से आश्विन और चैत्र में दो अधिमास हुये। यदि आश्विन का अधिमास न माना जाय तो आश्विन कृष्णामान्त के बाद पूणिमाँ तिथि में कृष्णादिचान्द्र आश्विन की पूर्ति होगी, परन्तु वहाँ उत्तर भाद्र नक्षत्र है अत उसे आशिवन नहीं कहा जा सकता। इसके बाद द्वितीय पूर्णिमा में अश्विनी भरनी नक्षत्र होने से कातिक न होगा। तृतीय पूर्णिमाँ में कृत्तिका नक्षत्र

है अतः अग्रहण भी न होगा। इस तरह मासों की व्यवस्था नष्ट हो जायगी। अधिमास मानने पर मासचिह्न के साथ उक्त मासों की व्यवस्था होती है, अतः पूर्वाधिमास मानना उचित है। शुक्लादि चान्द्रमास के लक्षण से आश्विन कृष्णामान्त में कन्याराशिस्थ सूर्य से वहाँ शुक्लादि चान्द्रमास भाद्रपद की पूर्ति हुई और उसके बाद तृतीय अमान्त तुलाराशिस्थ सूर्य में होने से वहाँ आश्विन को पूर्ति होने से ६० दिन का आश्विन मास होता है। यदि अधिमास न माना जाय तो, आश्विन कृष्णामान्त से द्वितीय अमान्त में शुक्लादि चान्द्रमास आश्विन की पूर्ति न होने से एवं तदग्रिम अमान्त में शुक्लादि-चान्द्रमास कार्तिक की पूर्ति न होने से शुक्लादि चान्द्रमास की भी व्यवस्था नहीं रहेगी। इस कारण सभी मासिक कृत्य लोप हो जायगें। यदि आश्विन का अधिमास माना जाय और चैत्र का नहीं तो भी उक्त दोष चैत्रादिमास में होता है। इस हेतु क्षयमासीय वर्ष में दोनों अधिमासों को मानना शास्त्र सम्मत है। स्पष्टाधिमास को न मानने पर अहर्गण में १ मास का अन्तर पड़ेगा। उसपर से साधित ग्रह इष्ट दिन का न होगा जो सर्वथा अनुचित है। गणिताधीन वस्तु में तर्क का स्थान नहीं है। यह विषय ज्योतिष का है अतः उसके अनुसार व्यवस्था होनी चाहिये।

क्षयमासीय वर्ष में पूर्वाधिमास की विशेषता— क्षयमास से अग्रिमाधिमास सदा ६० दिन का होता है परन्तु पूर्वाधिमास कभी ३० दिन का भी होता है। यह स्थिति तब होती है जब क्षयमास से अव्यवहित पूर्व अधिमास होता है। भाव यह है कि यदि एक ही शुक्लादि चान्द्रमास में स्पष्टमान

से अधिमास और क्षयमास हो तब अधिमास सम्बन्धी शुद्ध-मास के क्षय होने से अवशेष ३० दिन का ही अधिमास मात्र बचता है उदाहरणार्थ मान लीजिये कि कार्तिक कृष्णामान्त से पूर्व तुला की संक्रान्ति हुई और तदुत्तर द्वितीय अमान्त के बाद बृश्चिक की संक्रान्ति हुई और तृतीय अमान्त से पूर्व धनु की संक्रान्ति हुई। इस स्थिति में पहले दो अमान्त के मध्य सूर्य की संक्रान्ति न होने से अधिमास हुआ और बाद में अर्थात् द्वितीय तृतीय अमान्त के बीच दो संक्रान्ति होने से क्षयमास हुआ।

शुक्लादि चान्द्रमास के अनुसार कार्तिक कृष्णामान्त से लेकर तृतीय अमान्तपर्यन्तकाल शुक्लादि चान्द्रमास कार्तिक है, क्यों कि कार्तिक में अधिमास हुआ है। परन्तु तृतीय अमान्त में धनुराशिस्थ सूर्य होने से वहाँ शुक्लादिचान्द्रमास कार्तिक की पूर्ति न होकर अग्रहण की पूर्ति देखी जाती है अतः कार्तिक का क्षय हुआ। इसलिये एक ही मास में अधिमास एव क्षय-मास होने से शुद्ध कार्तिक शुक्ल और मार्ग कृष्णपक्ष का क्षय हो गया। केवल ३० दिन का अधिमास बच गया। क्षयमास बोधक सारिणी देखने से स्पष्ट हो जायगा कि कब एकही मास में अधिमास एव क्षयमास हुये हैं। इस स्थिति को स्पष्ट रूप से गोलमृग कमलाकर भट्ट ने स्वरचित 'सिद्धान्ततत्वविवेक' के शेषवासना- में लिखा है— "*अथ क्षयानन्तरं योऽधिमासः सतु सदैव षष्टिदिनात्मकः। अव्यवहितस्तु त्रिंशद्दिनात्मकः तच्छुद्धमासाभावात्। अनन्यगत्या अशुद्धमप्येनं शुद्धं मत्वा तत्साम्बत्सरं तस्मिन्नेव कार्यं, तदग्रिमस्य क्षयत्वात्।* क्षयमास से व्यवहित पूर्वाधिमास ६० दिन का होगा। उसमें अशुद्ध और शुद्ध दोनों मास होंगे। यह आगे लिखा है जैसे—

"ब्यवहितस्य शुद्धाशुद्धयोः सद्भावात् । अग्रिमाधिकमास वत्तन्निर्णयोऽस्त्यैव । निबन्ध में जहाँ पूर्बाधिमास को शुद्ध कहा है, वहाँ पूर्ब शब्द से अब्यवहित पूर्ब समझना चाहिये। इसको निम्न पंक्ति में स्पष्ट किया है यथा—

"पूर्बोऽधिकः शुद्धोग्राह्य इत्यत्र पूर्बशब्देनाब्यवहित एव पूर्बोनान्तरितः"। आर्षग्रन्थे द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैरित्यादि मध्यमाधिकमासोक्तिः स्पष्टार्थमुपयुक्तत्वेनावृतापि प्रमाणत्वेन न सा फलार्थम्। अत्रयन्मते पूर्बोऽधिको नैवाधिकः। ये च मध्यमाधिक मासोकत्या स्पष्टोक्त निर्णय प्रवृत्तास्तन्मते त्वग्रिमक्षयाधिकयोरप्यसंभव इति ज्योतिःशास्त्रवासनावाह्या बहव इहानींतना अनार्षमप्यार्षमूलकं आद्दतपरशास्त्रानभिज्ञस्वाद्यपरम्परया अनीश्वरवादिनोऽहंकृता मिथ्याब्यवहार प्रवृत्ताः स्वकीयेषु स्वस्वोत्कर्ष प्रकटयन्ति तन्मतं शिष्टैर्नादरणीयम्।

उपर्युक्त पंक्ति से यह सिद्ध हो गया कि मध्यमाधिमास ग्राह्य नहीं है तथा क्षयमास से पूर्ब जो अधिमास वह सर्वथा ग्राह्य है।

ज्योतिष और धर्मशास्त्र का समन्वय—

कुछ धर्मशास्त्र के निबन्धों में पूबाधिमास को शुद्ध एवं त्रिशद्दिनात्मक कहा गया है जो क्षयमास के अब्यवहित पूर्बाधिमास के लिये उचित है। यह ज्योतिष का भी सिद्धान्त है। क्षयाधिमास के विषय गणिताधीन हैं अतः उसमें ज्योतिष की प्रधानता आवश्यक है। क्षयमास में दो मासों का कार्य तिथि के पूर्बार्द्ध एव परार्द्ध में होता है। इसके लिये ज्योतिष में तिथेर्विभागौ प्रथमान्त्य सञ्ज्ञौ" तथा धर्मशास्त्र में तिथ्यर्द्धे प्रथमे पूर्वो" इत्यादि प्रमाण हैं 'मासमीमांसा' में लिखा है—

"मासयोः शंकर एव क्षयः न तु कस्यापि लोपः"

अर्थात् संकीर्णमास द्वयात्मक क्षय मास है। अतः किसी मास का लोप नहीं होता। यह ज्योतिष के अनुकूल ही है, क्योंकि जिस तिथि का क्षय होता है उसका मान तो रहता ही है अतः क्षय का अर्थ लोप नहीं है। जिस तिथि का क्षय होता है उसका पृथक् कोष्ट एवं दिन पञ्चाङ्ग में नहीं रहता। इसी तरह मास क्षय में क्षयमास की अलग सत्ता नहीं होती। क्षयमास में दो मास मिलकर एक मास होता है। सूर्योदय कालमें जिस तिथि का मान नहीं पहुँच पाता, उसतिथि का क्षय होता है और जिस संक्रान्त्युपलक्षित चान्द्रमास की पूर्ति अमान्तकाल में नहीं होती, उसमास का क्षय होता है। धर्मशास्त्रीय बचन पूर्व में लिखें हैं अतः उनको देखने से ज्ञात होगा कि वे ज्योतिष के अनुकूल ही हैं। कुछ गणितानभिज्ञ व्याख्याकार ने अपनी व्याख्या में ज्योतिष के विरुद्ध व्याख्या की है जो सर्वथा उचित नहीं है। मेरी दृष्टि से सभी बचन ज्योतिष के पोषक हैं।

क्षयमास में वार्षिककृत्य का निर्णय —

क्षयमास में दो शुक्लादिचान्द्रमास मिले रहते हैं, अतः दोनों मासों का शुक्लपक्ष मिलकर क्षयमास का प्रथम पक्ष और दोनों का कृष्णपक्ष मिलकर द्वितीय पक्ष होता है। क्षयमासीय प्रत्येक तिथि का पूर्वार्द्ध प्रथममास अर्थात् जो मास क्षय हो उसका मान है और उत्तरार्ध द्वितीय शुद्ध मास का मान होता है। इसलिये क्षयमासीय सभी कार्य तिथि के पूर्वार्द्ध में और शुद्ध-मास के कार्य तिथि के उत्तरार्द्ध में होंगे। धर्मशास्त्र में यह भी कहा गया है कि कार्योपयुक्त काल तिथि के पूर्वार्द्ध या परार्द्ध जिस में हो उसमें वह कृत्य करना चाहिये। परन्तु संकल्प वाक्य में जिस मास सम्बन्धी वह कार्य हो उसका

उल्लेख करना आवश्यक है। मानलिजिये कि शुक्लादिचान्द्र-मास अग्रहण का क्षय हुआ तो मार्गशुक्ल और पौष शुक्ल मिलकर क्षयमास का प्रथम पक्ष और पौषकृष्ण एवं माघकृष्ण मिलकर द्वितीय पक्ष हुआ। यदि पौष शुक्ल पञ्चमी तिथि को वार्षिक श्राद्ध करना हो और पञ्चमी तिथि का उत्तरार्द्ध रात्रि में हो तब दिनमें ही पञ्चमी के पूर्वार्द्ध में वार्षिकश्राद्ध होगा। यहाँ पञ्चमी का पूर्वार्द्ध मार्ग शुक्ल का मान है अतः संकल्प-वाक्य निम्नलिखित होगा—

ओमद्य मार्गेमासि शुक्लेपक्षे पञ्चम्यां तिथौ पौष मासीय शुक्ल पक्षीय पञ्चमी तिथि कर्तव्यं अमुम गोत्रस्यामुक शर्मणः पितुः सांवत्सरिकेकोद्दिष्ट श्राद्ध महं करिष्ये।

इसी तरह अन्य कृत्यों में भी समझना चाहिये। क्षयमासीय तिथि के पूर्वार्द्ध में मृत व्यक्ति का वार्षिक श्राद्ध अग्रिम वर्ष क्षयमास सम्बन्धी पक्ष एवं तिथि में और उत्तरार्द्ध में मृत व्यक्ति का श्राद्ध शुद्धमास सम्बन्धी पक्ष एव तिथि में होता है। क्षयमास की यह विशेषता हैं कि क्षयमास के प्रथम पक्ष में मृत व्यक्ति का श्राद्ध अग्रिम वर्ष पीछे और द्वितीय पक्ष के मृत व्यक्ति का श्राद्ध पहले होता है।

क्षयमास का फल—

क्षयमासो भवेद् यस्मिन् तस्मिन् वर्षेऽति विग्रहः।
दुर्भिक्षमथवा पीड़ा क्षत्रभंगं करोति वा ॥३०॥
मार्गशीर्षे तु दुर्भिक्षं विग्रहश्चापि जायते।
पौषे तु क्षत्रभंगः स्यात् रोगेणाकुलिताः प्रजाः ॥३१॥
माघे महद्भयं ज्ञेयं शस्यहीना बसुन्धरा।
उत्पाताः बहवस्तत्र लोकाः क्षीणाः भवन्ति वै ॥३२॥

जिसवर्ष क्षयमास होता है उसवर्ष विग्रह या दुर्भिक्ष या पीड़ा अथवा क्षत्र भंग होता है।

मार्गशीर्ष में दुर्भिक्ष एवं विग्रह, पौष में क्षत्रभंग एवं रोगाधिक्य और माघ में महद्भय अनेक दुर्घटना, उपज की कमी, अनेक उत्पात और लोगों का क्षय होता है ॥३०-३२॥

विशेष-- 'क्षीयन्तेक्षत्रिया यत्र' इस व्युत्पत्ति से क्षयमास का अर्थ विग्रह द्योतक है। कहा भी है—

यदावक्रातिचाराभ्यां सूर्यसक्रमणं भवेत्।
क्षत्रियाणामसृग्धारा तदावहति मेदिनी ॥

एवं च—

पक्षस्यमध्ये द्वितिथि विनष्टे महाहवेरौरवविग्रहश्च।
पक्षे विनष्टे च पती विनष्टौ मासक्षयश्चेद्क्षयती बसुन्धरा ॥

क्षयाधिवत्सर कथन—

गुरुसंक्रमयुग्मवत्समा गदिता सा ननु लुप्त संज्ञिता।
विबुधैःरहिता शुभे तु याऽधिसमा गीष्पति संक्रमोज्झिता॥३३॥

जिस सवत्सर में गुरु की संक्रान्ति दो हो वह वत्सर लुप्त अर्थात् क्षय संज्ञक है और जिस संवत्सर में गुरु की संक्रान्ति याने राशिसंचार न हो वह अधिवत्सर होता है। ये दोनों शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥३३॥

विशेष— मेषादिस्थे गुरौ यौ यो वत्सरः परिपूर्यते"इत्यादि वचनानुसार संवत्सर के अन्त में गुरु जिस राशि में रहते हैं उस राशि सम्बन्धी संवत्सर की पूर्ति होती है अतः गुरुसंचार रहित संवत्सर होने से एक राशि में दो संवत्सरों को पूर्ति होने पर अधिमास की तरह अधिवत्सर होना कहा गया है। जिस संवत्सर में गुरु की दो संक्रान्ति याने दो राशि का संचार हो, उस संवत्सर के अन्त में संवत्सर सम्बन्धी राशि में गुरु को नहीं रहने से उसकी पूर्ति न होगी अतः उस सव-

त्सर को क्षय वत्सर संज्ञक कहना उचित ही है।
क्षयवत्सर का लोप नहीं होता। क्षयमास की भांति दो संवत्सर मिलकर एक होता है। उन दोनों की व्यवस्था क्षयमास की तरह होगी। ज्योतिर्विदाभरण में लिखा है—

क्षयाधिमासावुदितौ पुरामया, क्षयाधिकाब्दस्य च रूपमुच्यते।
क्षयाधिका मार्गवतौ गुरौःसमा द्विसंक्रमाया क्रमतो विसक्रमा॥

जिस संवत्सर का क्षय होता है उसमें गुरु तीन राशियों को स्पर्श करते हैं, इसलिए कहा गया है—

एकस्मिन् वत्सरे जीवः स्पृशेद् राशित्रयं यदि।
लुप्तः संवत्सरो ज्ञेयो निन्दितः सर्वकर्मसु॥

इससे यह सिद्ध हुआ कि त्रिवत्सरस्पृक् क्षयवत्सर, त्रिमासस्पृक् में क्षयमास और त्र्यहः स्पृक् में क्षयदिन हो। रवि की सक्रान्तिवश क्षयाधिमास और गुरु संक्रमनवश क्षयाधिवत्सर होता है, मेष, वृष, मीन कुम्भ और मिथुन राशिस्थ गुरु में लुप्ताब्द का दोष नहीं होता यथा—

मेषे वृषे झषे कुम्भे मिथुने च स्थिते गुरौ।
लुप्ताब्दस्य न दोषः स्याद् विवाहादौशुभं स्मृत॥

उपसंहारः—

नगाङ्काष्टमही शाके युग्मेऽर्केऽहितिथौ सिते।
वैद्यनाथ प्रसादेन ग्रन्थोऽयं पूर्णतां गतः॥

इति मिथिला देशावयव दरभंगा मण्डलान्तर्गत हिरणी ग्राम निवासिना ज्योतिषाचार्य पदवी धारिणा पं० श्री लषण लाल शर्मणा विरचितमिदं तत्त्व प्रकाशिका हिन्दी व्याख्योपेतं क्षयाधिमासतत्त्वं समाप्तम॥

। इति शम् ।



